“वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हिन्दू धर्म के भक्ति–संगीत का परिवर्तित स्वरूप – एक अध्ययन”

दयालबाग़ एजूकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय) दयालबाग़,
आगरा से संगीत में पीएच0 डी0 की उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध–प्रबन्ध

2017

शोध–निर्देशकः

प्रो0 रवि कुमार भटनागर
संगीत–विभाग (गायन)

शोधकर्त्ताः

विशाल अग्रवाल

विभागाध्यक्ष :

प्रो0 (श्रीमती) सुभद्रा कुमारी सतसंगी
संगीत–विभाग

संकाय प्रमुख

प्रो0 जे0 के0 वर्मा

कला संकाय (संगीत विभाग)
दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट
(डीम्ड विश्वविद्यालय) दयालबाग़, आगरा–282005

भूमिका

संगीत–कला उतनी ही प्राचीन है, जितनी कि मानव जाति। मनुष्य के जीवन के साथ संगीत का सम्बन्ध जन्म से लेकर मृत्यु तक जुड़ा हुआ है। जीवन के लक्ष्य और अखण्ड आनन्द की प्राप्ति के लिए मन, वचन और कर्म से भगवान की भक्ति आवश्यक है। भगवान के प्रति अनन्य प्रेम तथा समर्पण की भावना को 'भक्ति' कहते है। भक्ति–संगीत के वर्तमान स्वरूप की चर्चा करने से पूर्व भक्ति व संगीत दोनों शब्दों के अर्थ को जानना अति आवश्यक है। भक्ति शब्द संस्कृत के 'भज' धातु में 'क्तिन' प्रत्यय से मिलकर बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ सेवा करना है। सगुण ईश्वर से उपासना के विकास के साथ भक्ति शब्द के अर्थ में व्यापकता आई, जिसमें ईश्वर की सेवा, पूजा, उपासना तथा श्रद्धा की भावना निहित है। तत्पश्चात् आराध्य के प्रति अनुरक्ति का नाम भी भक्ति ही हुआ, अर्थात् जिसमें प्रेम, श्रद्धा, सेवा व सम्मान की भावनाएं सम्मिलित रहती है। इस प्रकार भक्ति को ईश्वर तथा मोक्ष–प्राप्ति का साधन माना जाने लगा।

जैसा कि भगवत्गीता में चर्चा मिलती है कि मन और बुद्धि से ईश्वर में प्रेमपूर्वक सम्मान ही भक्ति है। इसी प्रकार 'नारद भक्ति सूत' में ईश्वर के प्रति अमृतरूपा पर प्रेम को भक्ति का रूप तथा ईश्वर के महात्म्य का ज्ञान और सतत् स्नेह को भक्ति बतलाया गया है, अर्थात् ईश्वर का महात्म्य ज्ञान रखते हुए उसके प्रति प्रेम एवं श्रद्धा के साथ अपने को पूर्ण समर्पित कर देना ही 'भक्ति' है। भक्ति–संगीत में 'संगीत' शब्द के अर्थ को भी जानना आवश्यक है। यह तो सर्वविदित है कि संगीत दो शब्दों से मिलकर बना है – 'सम+गीत' तथा इसके अन्तर्गत गायन, वादन व नृत्य तीनों का ही समावेश माना जाता है। समस्त ललित कलाओं में संगीत–कला को ही सर्वश्रेष्ठ कहा गया है। संगीत–कला अमूर्त भावनाओं को मूर्त रूप प्रदान करती है, अर्थात् सूक्ष्म से सूक्ष्म भावों को प्रकट करना संगीत द्वारा ही संभव है। संगीत का उद्देश्य 'नाद ब्रह्म ही उपासना' है। संगीत की सृष्टि नाद से होती है। जिस प्रकार मिट्टी या पत्थर से प्रतिमा, रंग रोगन से चित्र और ईंटों से भवन तैयार होते हैं, उसी प्रकार संगीत का उपादान नाद है। इसे 'नाद ब्रह्म' तथा 'शब्द ब्रह्म' भी कहा गया है।

संगीत एक स्वतंत्र कला है, यह समस्त सांस्कृतिक बंधनों से मुक्त है। संगीत हमारे आंतरिक, भावात्मक जीवन के स्वरूप पर प्रकाश डालता है। इस प्रकार भक्ति व संगीत दोनों का उद्देश्य एक ही है।

भक्ति के लिये तन्मयता, तन्मयता के लिये नाद तथा नाद के लिए नादादिक ऊर्जा की आवश्यकता होती है। विषय–वस्तु को दृष्टिगत करते हुए हिन्दू धर्म के सम्बन्ध में जब हम भक्ति–संगीत पर दृष्टिपात करते है तो पाते हैं कि निर्मल भक्ति भाव से ओत–प्रोत पद संगीत की स्वर, ताल, शब्द आदि में बद्ध कला ही भक्ति संगीत है।

भक्ति हमारे जीवन में विशेष महत्त्व रखती है। भक्ति के द्वारा काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जैसे शरीर एवं आत्मा को क्षीण करने वाले सभी कारकों पर अंकुश लगाया जा सकता है। भक्ति मानव को न केवल विनाशकारी चंगुल से छुडाकर अमरत्व प्रदान कर सकती है अपितु उसे इस चिन्ता कुल जगत के जंजालों मुक्त कर ऐसे लोक में पहुँचा सकती है जहां न कोई स्पर्धा है, न ही संघर्ष। हमारे प्राचीन वेदों, शास्त्रों आदि सभी में देवी–देवताओं की स्तुति आदि सभी प्राचीन समय से संगीतमयी थे। भक्ति भगवान के प्रति अर्पित की हुई एक ऐसी भावना है जिसेके वशीभूत होकर मनुष्य अपना सब कुछ उस विराट भगवान के चरणों में अर्पित कर देता है।

हमारे यहाँ संगीत को एक आराधना समझा जाता है। प्राचीन समय से ही प्राचीन ऋषि–मुनि ईश्वर को मनाने में जो तपस्या, जप–तप किया करते थे, उन सभी में संगीत के द्वारा ईश्वर की भक्ति की जाती थी। इसलिए प्राचीन समय से ही ईश्वर की आराधना के लिए ही संगीत का प्रयोग होने लगा था और तब से लेकर आज तक भक्ति–संगीत को ईश्वरीय आराधना अथवा ईश्वर तक पहुँचने का श्रेष्ठ माध्यम माना जाता है।

उपरोक्त चर्चा के आधार पर हम यह कह सकते है कि संगीत व धर्म का एक अटूट नाता है। धर्म और संगीत के रेशे परस्पर गुँथी हुई एक ऐसी मज़बूत रस्सी का निर्माण करते हैं जो परम्परा व संस्कृति से ओत–प्रोत होती है। एक आत्मा–परमात्मा के मिलन के इस मार्ग में जहाँ धर्म और संगीत दोनों ही एक दूसरे के सहायक घटक है, वहीं भक्ति इनकी सहयोगिनी के रूप में प्रत्यक्षः इस लक्ष्य–प्राप्ति का सबल माध्यम है।

धर्म से संगीत को और संगीत से धर्म को जोड़ने वाली शक्ति 'भक्ति' ही है। धर्म, संगीत और भक्ति तीनों का सम्मिश्रण एक रूप होकर अनन्त ईश्वर के चरणों में जाकर समर्पित हो जाता है। इस

प्रकार धर्म और संगीत के दो किनारों के बीच भक्ति की सनातन धारा निरन्तर प्रवाहमान होती रहती है। हमारे देश भारतवर्ष में भक्ति को एक विशेष स्थान है, क्योंकि यह विभिन्न धर्म, जाति और सम्प्रदाय के लोगों में बॅटा हुआ है। सभी धर्मों का पूजा, सेवा, आराधना आदि करने का अपना ही तरीका है।

भारत में प्राचीन काल से ही हिन्दू धर्म की परम्परा का प्रभाव अधिक दृष्टिगत होता है। यहां भक्ति–संगीत की अनेक मान्यताएं हैं जिनका वर्णन अनेक प्राचीन ग्रन्थों जैसे रामायण, भगवत् गीता, महाभारत आदि में देखने को मिलता है। इसके अतिरिक्त सूर, तुलसी, मीरा, रसखान आदि जैसे अनेक भक्त–कवियों ने अपनी भक्ति एवं काव्य के माध्यम से भक्ति–संगीत को एक विशेष स्थान प्रदान किया तथा धीरे–धीरे आगे चलकर भक्ति–संगीत ने समाज में अपना प्रमुख स्थान बनाया।

परिवर्तन प्रकृति का एक ऐसा शाश्वत सत्य है जो निरन्तर नवीन रूप लेता रहता है। जिस प्रकार जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन होते रहते हैं उसी प्रकार भक्ति–संगीत भी नवीन परिवर्तनों से अछूता न रहा। आज के भक्ति–संगीत में अनेक परिवर्तन हुए हैं। प्राचीन समय काक्ति–संगीत भाव–प्रधान हुआ करता था तो आज वह नवीन वातावरण के विभिन्न आयामों से प्रभावित हो रहा है।

शोधकर्त्ता की भी भक्ति–संगीत में बहुत रुचि है तथा प्रारम्भ से ही ईश्वर में आस्था रही है। बाल्यकाल से ही परिवार में उसने भक्ति का संगीतमय वातावरण देखा है, इस कारण शोधकर्त्ता ने भक्ति–संगीत के हिन्दू धर्म में वर्तमान समय में परिवर्तित स्वरूप एक अध्ययन विषय का चुनाव किया है। शोधकर्ता ने इस विषय पर कार्य करने से पूर्व सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण किया तथा उससे जो भी जानकारी प्राप्त हुई, उसका विवरण इस प्रकार है :–

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण :–

1970– भारतीय संगीत साहित्य में भक्ति–संगीत का योगदान– मनोहर विनायक राव

भागवत, भक्ति संगीत अंक, संगीत पत्रिका

1970– भक्ति और संगीत का पारस्परिक संबंध,–ब्रजरानी वर्मा, भक्ति संगीत अंक, संगीत पत्रिका

2013– वर्तमान में भक्ति–संगीत का परिवर्तित स्वरूप – हिन्दू धर्म के विशेष सन्दर्भ में–गुंजन उपाध्याय

उक्त सर्वेक्षण में प्रथम लेख में संगीत साहित्य में भक्ति–संगीत का क्या योगदान है, इस विषय की चर्चा की गई है, जिसमें लेखक ने भक्ति–संगीत का द्रविण काल, वैदिक काल, पौराणिक काल में प्रचलन को दर्शाया है। द्वितीय लेख में बृजरानी वर्मा जी ने भक्ति का संगीत से पारस्परिक सम्बन्ध दर्शाया है। दोनों ही विषय शोधकर्त्ता का विषय इनसे भिन्न हैं क्योंकि इनमें वर्तमान स्वरूप की कोई चर्चा नहीं है।

तृतीय विषय वर्तमान में भक्ति–संगीत का परिवर्तित स्वरूप शोधकर्त्ता का विषय के थोड़ा समीप है किन्तु यह कार्य न तो विस्तृत रूप में है, ना ही इसमें नवीन परिवर्तित स्वरूप को विभिन्न आयामों में दर्शाया गया है। शोधकर्त्ता ने संगीत–रचना के विभिन्न बिन्दुओं स्वर, ताल, लय एवं वाद्य प्रयोग आदि को अध्ययन का आधार बनाया है। इसके अतिरिक्त साहित्य का प्रयोग व प्रस्तुति के ढंग को भी अध्ययन में रखा है। वर्तमान में व्यवसायिक दृष्टि से भक्ति–संगीत में क्या–क्या नवीन प्रयोग हो रहे हैं, इसको भी अध्ययन के मुख्य बिन्दुओं में रखा गया है। इस प्रकार सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण में उपरोक्त वर्णित तथ्यों से स्पष्ट है शोधकर्त्ता का विषय इनसे नितांत भिन्न है तथा उसके संज्ञान में चयनित शोध–विषय पर अभी कार्य नहीं हुआ है।

विषय कथन :–

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हिन्दू धर्म के भक्ति–संगीत का परिवर्तित स्वरूप – एक अध्ययन।

शोध–विषय प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या :–

'भक्ति–संगीत' – यह दो शब्दों के मेल से बना है – भक्ति और संगीत, जिसका यहाँ तात्पर्य है संगीत के माध्यम से ईश्वर की आराधना करना।

उद्देश्य :–

- हिन्दू धर्म के भक्ति–संगीत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
- हिन्दू धर्म के भक्ति–संगीत की विभिन्न परम्पराओं का अध्ययन करना।
- वर्तमान में प्रचलित हिन्दू धर्म के भक्ति–संगीत का अध्ययन करना।
- हिन्दू धर्म के भक्ति–संगीत के परिवर्तित स्वरूप का अध्ययन करना।
- कतिपय प्रचलित एवं स्वरचित भक्ति–गीतों की स्वरलिपि का लेखन करना।

विषय का परिसीमांकन :–

समय एवं कार्य सीमा को देखते हुए शोधकर्त्ता अपने शोधकार्य के अन्तर्गत भक्ति–संगीत के केवल हिन्दू धर्म के वर्तमान समय में परिवर्तित स्वरूप का अध्ययन करेगा।

अध्ययन के स्रोत एवं विधि :–

शोधकर्ता विभिन्न पुस्तकालयों में उपस्थित विभिन्न ग्रन्थों, पत्रिकाओं, पुस्तकों एवं दृश्य–श्रव्य–सामग्री का अध्ययन करेगा तथा भक्ति–संगीत के विभिन्न विद्वानों से शोधकार्य सम्बन्धी विषय पर उनके विचारों को भी संग्रहीत करेगा। इसके साथ ही भक्ति–संगीत से जुड़े कलाकारों से साक्षात्कार करके शोध सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने का प्रयास करेगा।

अध्ययन की रूपरेखा :–

समस्त विषय–सामग्री से प्राप्त संकलित तथ्यों का अध्ययन एवं विश्लेषण निम्न अध्यायों के अन्तर्गत किया जायेगा :–

1. सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण
2. भक्ति–संगीत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं परस्पर अन्तर्सम्बन्ध
3. हिन्दू धर्म में भक्ति–संगीत की परम्परा
4. हिन्दू धर्म के भक्ति–संगीत का वर्तमान परिवर्तित स्वरूप

5. कतिपय भक्ति–गीतों की स्वरलिपि

अ. प्रचलित भक्ति–गीत

ब. स्वरचित भक्ति–गीत

6. निष्कर्ष

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वर्मा, ब्रजरानी, भक्ति और संगीत का पारस्परिक सम्बन्ध, भक्ति संगीत अंक, संगीत पत्रिका, संगीत कार्यालय, हाथरस।

2. भागवत, मनोहर विनायक राव, भारतीय संगीत साहित्य में भक्ति संगीत का योगदान, भक्ति संगीत अंक, संगीत पत्रिका, संगीत कार्यालय, हाथरस।

3. गर्ग, डॉ० लक्ष्मी नारायण, निबन्ध संगीत, संगीत कार्यालय हाथरस, द्वितीय संस्करण।

4. उपाध्याय, गुंजन, वर्तमान मे भक्ति संगीत का परिवर्तित स्वरूप–हिन्दू धर्म के विशेष सन्दर्भ में, लघु शोध–प्रबन्ध, एम .फिल, वर्ष 2013।

5. वर्मा, अमित, Sangeet Galaxy, E-Journal.